FA - II
Subject :- Hindi
Class – VIII

FA II VIII हिन्दी

5. 'गणेश शंकर विद्यार्थी'

लघुउत्तरीय प्रश्न :-

प्रश्न 1:- गणेश शंकर विद्यार्थी किस बात के लिए कटिबद्ध थे ?

उत्तर:- गणेश शंकर विद्यार्थी सामाजिक बुराइयों के निराकरण के लिए सदैव कटिबद्ध थे। जीवन के अंतिम समय तक साम्प्रदायिकता के विरुद्ध लड़ते रहे और अपने प्राण गँवा बैठे।

प्रश्न 2:- गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर:- गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्म 26 अक्टूबर 1890 ई. को इलाहाबाद के अतरसुइया मोहल्ले में हुआ था।

प्रश्न 3:- गणेश शंकर ने शिक्षा कहाँ प्राप्त की ?

उत्तर- गणेश शंकर ने प्रारंभिक शिक्षा ग्वालियर के मुंगावली नामक स्थान से प्राप्त की तथा उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद के कॉलेज में प्रवेश लिया परन्तु कुछ माह बाद इन्हें कॉलेज की पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी।

प्रश्न 4:- गणेश शंकर ने अपने पत्रकार जीवन की शुरुआत कैसे की?

उत्तर:- गणेश शंकर ने पढ़ाई छोड़ने के बाद 'कर्मयोगी' पत्र में लेख और टिप्पणियाँ लिखकर अपने पत्रकार जीवन की शुरुआत की। बाद में 'सरस्वती' के प्रख्यात संपादक पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के संपर्क में आए और उनके सहायक बनकर संपादन कार्य में हाथ बँटाने लगे।

प्रश्न 5:- 'प्रताप' पत्र की लोकप्रियता का क्या कारण था?

उत्तर:- 'प्रताप' पत्र के माध्यम से विद्यार्थी जी ने अंग्रेजी सरकार के अत्याचार और शोषण के विरुद्ध अपने विचार जन-जन तक प्रसारित किए जिससे इसकी लोकप्रियता दिनों-दिन बढ़ने लगी थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1:- स्वतंत्रता संग्राम में गणेश शंकर विद्यार्थी के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:- गणेश शंकर विद्यार्थी स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख क्रांतिकारी थे। उन्होंने अपने पत्र 'प्रताप' के माध्यम से देशवासियों को अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध जागरूक किया और देशप्रेम की भावना पैदा की। वे कर्मठ और जुझारू सेनानी थे। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में डिक्टेटर की भूमिका निभायी थी। उन पर कई बार राजद्रोह का आरोप लगा तथा वे पाँच बार जेल भी गए थे।

प्रश्न 2:- गणेश शंकर विद्यार्थी ने सरदार भगत सिंह को क्या परामर्श दिया?

उत्तर:- गणेश शंकर विद्यार्थी ने भगत सिंह को यह परामर्श दिया- "स्वतंत्रता के लिए काम करना एक परवाने की तरह होता है जो शमा से प्यार करता है और शमा की लपटों में जलकर मर जाता है।"

प्रश्न 3:- शिक्षा के बारे में विद्यार्थी जी के क्या विचार थे?

उत्तर:- गणेश शंकर विद्यार्थी जी ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जिसे पाकर भारतीय युवक निर्भीक और राष्ट्र के सच्चे सेवक बन सकें। अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लें और राष्ट्र को अंग्रेजी सरकार के अत्याचारों से मुक्त कर सकें।

प्रश्न 4:- गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे व्यक्ति का सांप्रदायिकता की भेंट चढ़ जाना हमारे समाज की किस बुराई की ओर संकेत करता है?

उत्तर:- गणेश शंकर विद्यार्थी सांप्रदायिकता के प्रबल विरोधी थे। यह विडंबना थी कि उनकी मृत्यु हिन्दु-मुस्लिम दंगों के कारण ही हुई थी। दोनों ही धर्मों द्वारा स्वयं की श्रेष्ठता को सिद्ध करना और एक दूसरे को नीचा दिखाना ही उनका उद्देश्य था। इससे हमारे समाज में फैली धार्मिक उन्माद की भावना उजागर होती है

प्रश्न 5:- 'गणेश शंकर विद्यार्थी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।' इस कथन का प्रमाण सहित समर्थन कीजिए।

उत्तर:- गणेश शंकर विद्यार्थी सच्चे देशभक्त थे। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने पत्र 'प्रताप' के द्वारा भारतीयों में राष्ट्रीय भावना का संचार किया। अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति सूझबूझ निर्भीकता और विलक्षण प्रतिभा से 'प्रताप' का प्रकाशन जारी रखा और अंग्रेजी सरकार की धमकियों को अनसुना कर दिया। वे एक समाज सुधारक भी थे। उन्होंने सामाजिक बुराइयों और सांप्रदायिकता का कड़ा विरोध किया। ग्राम सुधार के लिए 'सेवा आश्रम' की स्थापना की। इस प्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी बहुमुखी प्रतिभा के धनी माने जाते थे।

3

आशय स्पष्ट कीजिए:-

1. कबीर के चिंतन का स्त्रोत जहाँ मूल 'ब्रह्म' था वहीं विद्यार्थी जी के चिंतन का स्त्रोत था "राष्ट्र"।

कबीरदास जी ने समाज में फैली बुराइयों को हटाने के लिए एक ब्रह्म की उपासना को श्रेष्ठ बताया उन्होंने अपने दोहों के द्वारा मानवता का पाठ पढ़ाया था। उसी प्रकार विद्यार्थी जी भी केवल राष्ट्रहित के बारे में सोचते थे। समाज के विभिन्न समुदायों से यह अपेक्षा रखते थे कि वे भी स्वहित को भूलकर राष्ट्र-हित के बारे में विचार करें तो देश में एकता स्थापित होगी और स्वतंत्रता आंदोलन को गति मिल पाएगी।

2. वे स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ तथा जुझारू सेनानी थे।

विद्यार्थी जी स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा को स्पष्ट करते हुए 'प्रताप' पत्र का प्रकाशन भी इसलिए किया था कि वे भारतीयों के मन में देशप्रेम की भावना जगा सकें और अधिक से अधिक लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में सहभागी बना सके। देश के स्वतंत्रता

आंदोलन में सक्रिय योगदान होने के कारण 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' में 'डिक्टेटर' मनोनीत किया गया। इस दौरान उनपर राजद्रोह का आरोप लगा और कई बार जेल भी गए। उपरोक्त बातें यह सिद्ध करती हैं कि वे एक कर्मठ और जुझारू सैनानी थे।

3:- यह कैसी विडंबना है कि जो व्यक्ति जीवनभर सांप्रदायिकता की विषैली भावना के विरुद्ध जूझता रहा, अंततः वह उसी का शिकार हुआ।

आशय:- विद्यार्थी जी समाज में फैली धर्मांधता के कट्टर विरोधी थे। वे चाहते थे कि सभी धर्मों के लोग पहले भारतवासी बनें और देशहित के लिए कार्य करें। परन्तु दोनों धर्मों के लोग उनकी बात नहीं समझ पाए और दंगों में बीच बचाव करते हुए अपने प्राण गँवा बैठे। यह विडंबना ही थी कि विद्यार्थी जी ने जीवन भर जिस बात का विरोध किया वही विषैली भावना उनकी मौत का कारण बनी।

4. स्वतंत्रता के लिए काम करना एक परवाने की तरह होता है जो शमा को प्यार करता है और शमा की लपटों में जलकर मर जाता है।

आशय:- भगतसिंह विद्यार्थी जी से मिलने आए तब विद्यार्थी जी ने उन्हें देश सेवा के लिए प्रेरित करते हुए कहा था कि राष्ट्र की सेवा करना चाहते हो तो सर्वस्व समर्पण के लिए तैयार रहना क्योंकि राष्ट्र उस शमा के समान है जिसके प्रेम में पड़कर राष्ट्रभक्त रूपी परवाना स्वयं को जला देता है। अर्थात् राष्ट्र की सेवा करते हुए मृत्यु का आलिंगन भी करने के लिए भी तैयार रहना होगा।

6. 'माँ की ममता'

लघुत्तरीय प्रश्न -

प्रश्न 1. देव शर्मा के माता पिता का क्या नाम था?
उत्तर देव शर्मा के माता-पिता का नाम यज्ञ शर्मा और रोहिणी था।

प्रश्न 2. देव शर्मा भिक्षा माँगने कहाँ गए?
उत्तर देव शर्मा भिक्षा माँगने के लिए नंदिग्राम में गए। वहाँ कश्यप नाम के ब्राह्मण के घर भिक्षा माँगी।

प्रश्न 3. → सावित्री क्या कर रही थी?
उत्तर देव शर्मा जिस समय सावित्री के घर आए उस समय वह पतिव्रत धर्म का पालन करते हुए अपने पति की सेवा में तत्पर थी।

प्रश्न 4. - सावित्री को सिद्धि की प्राप्ति कैसे हुई?
उत्तर:- स्त्रियों के लिए पति सेवा सबसे बड़ा धर्म है और सावित्री अपने पति की सेवा पूर्ण निष्ठाभाव से करती थी इसलिए दूर की बात जानने की सिद्धि उसे प्राप्त हो गई थी।

प्रश्न 5. - कौआ और बलाका कौन थे?
उत्तर:- कौआ देव शर्मा की काली करतूतों का प्रतीक था और बलाका उसकी माँ की सात्विक कल्याण कामना का प्रतीक था।

दीर्घ उत्तरीय

प्रश्न 1. - देव शर्मा की माता क्यों दुखी थी?
उत्तर- देव शर्मा के पिता की मृत्यु हो गई थी और पिता के संस्कार के बाद वह भी घर छोड़कर चला गया था।
पति की मृत्यु का उसे उतना दुख नहीं हुआ जितना बेटे के घर छोड़कर जाने का हुआ था। अब वह हमेशा दुखी रहती थी और बेटे के आने की प्रतीक्षा करती रहती थी।

प्रश्न 2:- देव शर्मा को कैसे ज्ञात हुआ कि उसे सिद्धि प्राप्त हुई थी?

उत्तर:- एक दिन देव शर्मा ने नदी स्नान के बाद वस्त्र को सूखने के लिए डाला तो उसे एक ओर से कौआ और दूसरी ओर से बगुला उठाकर ले जाने लगे। देव शर्मा ने उन्हें डराया तब वे दोनों पक्षी डर के मारे उस पर बीट करके उड़ गए। यह देख देव शर्मा ने अपनी क्रोध भरी दृष्टि से उन्हें देखा। उसकी क्रोधाग्नि से वे दोनों पक्षी जलकर भस्म हो गए। इस घटना से देव शर्मा को इस बात का ज्ञान हुआ कि उसे विशेष सिद्धि प्राप्त हो गई है।

प्रश्न 3:- देव शर्मा ने कौए और बलाका को भस्म कर दिया परंतु सावित्री को अपनी कोप दृष्टि से भस्म क्यों नहीं कर पाया?

उत्तर:- देव शर्मा सावित्री को अपनी कोप दृष्टि से भस्म नहीं पाया क्योंकि सावित्री एक पतिव्रता नारी थी और वह अपने कर्त्तव्य का पालन पूर्ण निष्ठा से करती थी। देव शर्मा अपने अहंकार की भावना में जल रहा था क्योंकि काक और बलाका को जलाने के पश्चात उसकी सिद्धियाँ भी जलकर भस्म हो गई थी। इसलिए सावित्री पर उसकी सिद्धियाँ काम नहीं कर पाई।

प्रश्न 4:- सावित्री ने देव शर्मा को क्या समझाया?

उत्तर:- सावित्री ने देव शर्मा को उसके कर्त्तव्य याद दिलाए और उसे समझाया कि उसने अपना घर छोड़कर माँ को और अधिक दुखी कर दिया है। जिस माँ ने तुम्हारे पालन-पोषण में इतने कष्ट सहे, उसकी सेवा करना तुम्हारा प्रथम कर्त्तव्य है। तुम्हारी माँ अब भी तुम्हारी भलाई ही चाहती है इसलिए माँ के पास लौट जाओ और जीवनभर मन लगाकर उसकी सेवा करो।

प्रश्न 5:- बलाका ने देव शर्मा की सहायता कैसे और क्यों करी?

उत्तर बलाका के रूप में देव शर्मा की माता की सात्विक कल्याण कामना थी जिसने स्वयं भस्म होकर देव शर्मा के प्राण

बचाए थे। माँ कभी किसी बेटे का बुरा नहीं चाहती, इसलिए माँ की कोमल भावना बेटे की रक्षा करती है।

प्रश्न 6:- इस कहानी का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :- इस कहानी का भाव है कि व्यक्ति को सदैव अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। माता-पिता की सेवा करना पुत्र का प्रथम कर्त्तव्य होता है जिसे मन लगाकर पूरा करना चाहिए क्योंकि माता-पिता की सेवा से व्यक्ति की उन्नति के रास्ते खुल जाते हैं और वह यश प्राप्त करता है।

प्रश्न 7:- पुत्र की अनुपस्थिति में माँ के हृदय में उठने वाले भावों को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :- पुत्र की अनुपस्थिति में भी माँ के हृदय से आशीष ही निकलते हैं। वह सदैव बच्चों की कुशलता की कामना करती है। उसके बच्चे जहाँ भी रहें सुखपूर्वक रहें, यही कामना करती रहती है। बच्चों के दुख-दर्द भी वह स्वयं झेल लेती है। माँ के बच्चे उसके पास रहे या ना रहें पर वह दिल से सदैव उनके पास ही रहती है।

पाठ - 7 फूल और काँटा

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न - 1 फूल और काँटे के जन्म एवम् पालन-पोषण में क्या समानताएँ हैं?

उत्तर - फूल और काँटे के जन्म एवम् पालन-पोषण में समानता यह है कि एक ही पौधे से उनका जन्म होता है तथा एक ही पौधा उनका पालन-पोषण करता है।

प्रश्न - 2 काँटा लोगों के साथ कैसा व्यवहार करता है?

उत्तर - काँटे का स्वभाव फूल से विपरीत रहता है, काँटा लोगों की उँगलियों में छेद कर देता है, तथा उनके ~~xxx~~ कपड़े फाड़ देता है।

प्रश्न - 3 फूल का तितली और अन्य लोगों से क्या व्यवहार रहता है?

प्रश्न - 4 मनुष्य श्रेष्ठ होता है — उत्तर - अपने गुणों और स्वभाव के आधार पर

प्रश्न - 5 दीर्घ उत्तरीय

प्रश्न - 1 लोगों का काँटे और फूल के प्रति व्यवहार में क्या अंतर होता है?

उत्तर - लोगों की आँखों में काँटा खटकता है और फूल उन्हें अच्छा लगता है अर्थात् लोग काँटे को बुरा और फूल को अच्छा मानते हैं।

प्रश्न - 2 फूल और काँटे के व्यवहार के अंतर से कवि हमें क्या समझाना चाह रहा है?

उत्तर - ~~xxx~~ कवि फूल और काँटे के व्यवहार के माध्यम से हमें यह समझाना चाह रहा है कि बड़ा बनने के लिए कुल (वंश) की बड़ाई अर्थात् श्रेष्ठ कुल में जन्म लेना ही काफी नहीं होता बल्कि बड़ा बनने के लिए हमारे कर्म भी अच्छे होने चाहिए तथा हमारे गुण तथा स्वभाव भी श्रेष्ठ होना चाहिए।

प्रश्न - 3 प्रकृति ने फूलों के साथ काँटे क्यों बनाए हैं?

उत्तर - जिस प्रकार दुःख के साथ सुख जुड़ा है, उसी प्रकार फूल के साथ-साथ काँटे भी जुड़े होते

होते हैं। काँटों के साथ होने से ही फूलों का महत्व पता चलता है। इसीलिए प्रकृति में फूलों के साथ काँटे होते हैं।

प्रश्न-4 चार वाक्यों में 'फूल और काँटा' कविता का आशय बताइये?

उत्तर - फूल और काँटों के द्वारा कवि ने सज्जन और दुर्जन के सहज स्वभाव का व्यवहारिक चित्रण किया है। फूल लोगों को अच्छे लगते हैं जबकि काँटे सभी की आँखों में खटकते हैं। जिस प्रकार फूल तितलियों को गोद में लेता है, औरों को रस पिलाता है उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति भी समाज में असहाय लोगों की सहायता करता है। वहीं काँटे दूसरों को कष्ट देते हैं, काँटों के समान दुर्जन व्यक्ति भी दूसरों के लिए मुसीबतें ही बढ़ाते हैं।

प्रश्न-5 सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

है खटकता एक सबकी आँख में, दूसरा है सोहता सुर-सीस पर
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे, जो किसी में हो बड़प्पन की कसर॥

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध द्वारा रचित कविता 'फूल और काँटा' से अवतरित हैं। इन पंक्तियों में फूल और काँटे के स्वभाव के विषय में बताया है -

व्याख्या - काँटा सभी की आँखों में खटकता है जबकि फूल देवताओं के सिर पर शोभायमान होता है। यदि किसी में बड़प्पन की कमी हो तो उसके कुल (वंश) की बड़ाई कुछ भी काम नहीं आ पाती।

प्रश्न-6 आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) कुल की बड़ाई -

आशय - इस पंक्ति का आशय है परिवार का मान-सम्मान।

(ख) प्यार डूबी तितलियाँ -

आशय - तितलियाँ फूलों के प्यार में डूबी रहती हैं अर्थात् वे फूलों के आस-पास मँडराती रहती हैं।

(ग) जी की कली खिलाना -

आशय - फूल अपनी खुशबू से वातावरण को खुशनुमा बना देता है जिससे चारों ओर खुशी का माहौल हो जाता है।

****